साहित्यसुधा
साहित्यकारों की वेबपत्रिका
साहित्यकारों की रचना स्थली
वर्ष: 3, अंक 45, सितम्बर(द्वितीय) , 2018

अभिलाषा

अर्विना गहलोत

सड़क के किनारे छाते के नीचे बैठकर जूते की मरम्मत करने वाले दीनू की बेटी अभिलाषा सारकारी स्कूल में आठवीं कक्षा की छात्रा थी । पढ़ने में बेहद होशियार कक्षा में हमेशा अव्वल आती लेकिन पं रमाशंकर जी उससे हमेशा दूरी बना कर बात करते अपने पीरियड में सबसे किनारे बैठाते अन्य छात्र छात्राएं भी उससे दूर ही रहते । उसके साथ कोई नहीं खेलता । सब जानते हुए भी सदा प्रसन्न रहती जब भी समय मिलता पढ़ाई करती ।

घर आकर माँ न होने की वजह से खाना बनाती तब तक दीनू अपना झोला लेकर दुकान समेट कर घर आ जाता दोनों मिलकर खाना खाते । बाकी सभी कामों को समेट कर अभिलाषा बिस्तर लगा देती । बाबा !सब काम हो गया अब मैं पढ़ाई करु जीती रहो ! बिटिया खूब पढ़ो लिखो ।

अभिलाषा ने स्कूल में हो रहे भेदभावपूर्ण व्यवहार को कभी बाबा को नहीं बताया वो बस अपनी पढ़ाई पूरी करना चाहती थी ।

आज स्कूल में शिक्षक दिवस मनाया जानेवाला था ।अभिलाषा जल्दी से तैयार हो स्कूल के लिए निकली बाबा को प्रणाम किया और चल दी अभी कुछ ही दूर गई थी देखा सड़क पर कोई गिरा है देखकर ठिठक गई । आगे पहुंच कर देखा स्कूल के शिक्षक पं रमाशंकर जी अपनी मोटर साइकिल फिसलने से गिर गए हैं। उनके हाथ और पैर से खून निकल रहा था । अभिलाषा ने जल्दी से एक आटो रिक्शाचालक को रोका और अपने शिक्षक को सहारा देकर रिक्शेवाले की मदद से आटोरिक्शे में बैठाया और खुद शिक्षक को सहारा

देकर बैठ गई । अभिलाषा ने आटोरिक्शा चालक से कहा भईया जल्दी से नजदीक के अस्पताल पहुंचा दो ।

आटो वाले ने एक अस्पताल के सामने आटो रोक दिया अभिलाषा ने अपने बैग से बाबा के लिए दवाई खरीदने के लिए जो पैसे लाई थी उसमें से आटो वाले को दे दिए । शिक्षक को सहारा देकर अस्पताल में अंदर ले गई और उनकी इमरजेंसी वार्ड में जाकर मरहम-पट्टी कराई सहारा देकर बैंच पर बिठाकर पूछा सर मेरे हाथ का पानी पी लेंगे । अभिलाषा में पहले ही तुम्हारे प्रति अपने व्यवहार से शर्मिंदा हूँ । अभी तक में जात-पात के चक्कर में उलझा हुआ था आज पता चला मानवता ही सबसे ऊंची है । संस्कार तो वक्त पड़ने पर पता चलते हैं कितने ही छात्रमुझे गिरा हुआ लहूलुहान देखकर भी आगे बढ़ गए । आज तुने मेरी आंखें खोल दी अच्छी शिक्षा पाने से कोई महान नहीं होता महान वो होता है जो उस शिक्षा पर अमल करता है ।वह तुमने आज कर दिखाया और एक शिक्षक का मान बढ़ाया है । मुझे तुम पर गर्व है । तुम आगे चलकर नाम रोशन करोगी ।

मुझे माफ़ कर दो अभिलाषा पश्चाताप के अश्रू बिंदू छलक आए । लाओ अभिलाषा पानी पिलाओ आज अभिलाषा को लगा उसकी तपस्या सफल हो गई है ।

अभिलाषा मुझे स्कूल ले चलो मैं सबके सामने तुम्हें स्वीकारना चहता हूँ । आज एक शिक्षक का हृदय परिवर्तन हुआ है । अभिलाषा ने आटोरिक्शा में अपने शिक्षक को सहारा देकर बैठाया स्कूल चलने के लिए कहा अभिलाषा मन ही मन सोच रही थी बाबा की दवाईयां कैसे खरीदेगी ?

तभी चर्रर से ब्रेक लगा देखा स्कूल आ गया था । अभिलाषा ने आटोरिक्शा वाले को पैसे दिए और शिक्षक को सहारा देकर सभा भवन की ओर लेकर गई सभी देखकर आश्चर्य चकित थे आज ये उल्टी गंगा कैसे बह रही है। अभिलाषा ने सर को स्टेज पर अन्य शिक्षकों के पास बैठा कर स्वयंम नीचे आकर बैठ गई ।

पं रमाशंकर जी ने आज घटित घटना से सब को अवगत कराया साथ ही अभिलाषा की शिक्षा का सारा खर्च उठाने का निर्णय लिया ।सभी ने अभिलाषा की प्रशंसा की और

स्कूल के प्राचार्य ने सराहनीय कार्य के लिए एक हजार रुपए का नगद पुरस्कार दिया । आज घर लोटते हुए अभिलाषा का मन फूल सा हल्का हो गया था ।

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें